Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

वेद, उपनिषद एवं भारतीय साहित्य में महिलाओं की भूमिका : श्रीमद्भगवद्गीता के विशेष संदर्भ में

भावना तिवारी*

* शोधार्थी (समाज कार्य) देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – भारतीय दर्शन और साहित्य में नारी की भूमिका सदैव अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। वैदिक युग में महिलाओं को शिक्षा, दर्शन और आध्यात्मिक चिंतन में समान अधिकार प्राप्त थे, जिसके प्रमाण गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषियों के विचार-विमर्श से मिलते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता, जो केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक दार्शनिक जीवन दृष्टि है, महिलाओं के आध्यात्मिक अधिकारों और मोक्ष प्राप्ति की संभावनाओं को समान रूप से स्वीकार करती है। गीता में वर्णित कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्ति योग के सिद्धांत न केवल पुरुषों के लिए, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आध्यात्मिक उन्नति में लिंग कोई बाधा नहीं है।

इस शोध पत्र में गीता के स्त्री-सशक्तिकरण संबंधी विचारों का विश्लेषण करते हुए भारतीय महिला दार्शनिकों के योगदान को भी समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन आधुनिक संदर्भ में गीता के संदेश को नारी सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और सामाजिक विकास के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में प्रस्तुत करता है। आज जब महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, राजनीति और समाज सेवा में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, तब गीता में वर्णित सिद्धांत अधिक प्रासंगिक हो जाते हैं। यह शोध पत्र इस विचार को प्रमाणित करने का प्रयास करता है कि भारतीय दर्शन में नारी केवल श्रद्धा का नहीं, बल्कि शक्ति और ज्ञान का भी प्रतीक रही है, और गीता का संदेश आज भी महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए उतना ही उपयोगी है जितना प्राचीन काल में था।

शब्द कुंजी – वेद, उपनिषद, गीता, नारी सशक्तिकरण, भारतीय दर्शन, महिला दार्शनिक, भक्ति आंदोलन।

प्रस्तावना – भारतीय दर्शन में स्त्रियों को सदा से ही सम्मानित और विशेष स्थान प्रदान किया गया है। वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक, महिलाओं ने न केवल धार्मिक और दार्शनिक विचारधारा के विकास में योगदान दिया है, बल्कि समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वैदिक काल में स्त्रियों को शिक्षा, धर्म, राजनीति और दर्शन के क्षेत्र में स्वतंत्रता प्राप्त थी। गार्गी, मैत्रेयी, लोपामुद्रा जैसी विदुषियों ने न केवल ब्रह्मविद्या पर गहन चर्चा की, बल्कि ऋग्वेद और अन्य ग्रंथों की ऋचाओं की रचना भी की। यह दर्शाता है कि उस समय स्त्रियों को केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उन्हें ज्ञान प्राप्ति और दार्शनिक संवाद में समान अवसर प्रदान किए गए।

महाभारत के भीष्म पर्व में श्रीमद्भगवद्गीता का उल्लेख आता है, जो केवल युद्ध और नीति का ग्रंथ नहीं, बल्कि जीवन दर्शन का भी सार प्रस्तुत करती है। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया ज्ञान, कर्म, भक्ति और ज्ञानयोग के सिद्धांतों पर आधारित है, जो न केवल पुरुषों बल्कि महिलाओं के लिए भी समान रूप से लागू होते हैं। गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि भक्ति और ज्ञान प्राप्ति के मार्ग में किसी जाति, वर्ग या लिंग का कोई बंधन नहीं है। श्रीकृष्ण स्वयं यह स्वीकार करते हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान मोक्ष प्राप्त करने और आत्मज्ञान के पथ पर अग्रसर होने के योग्य हैं।

भक्ति आंदोलन ने भी महिलाओं को आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्रदान की, जहाँ मीराबाई, अक्का महादेवी, संत जनाबाई जैसी महान विभूतियों ने समाज की रूढ़ियों को तोड़कर अपने आध्यात्मिक पथ को चुना। आधुनिक काल में सावित्रीबाई फुले, इंदिरा गांधी, कल्पना चावला, मदर टेरेसा जैसी महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई, जिससे यह प्रमाणित होता है कि स्त्रियाँ केवल एक पारिवारिक संरचना तक सीमित नहीं हैं, बल्कि समाज में परिवर्तन लाने की भी क्षमता रखती हैं।

आज जब महिला सशक्तिकरण और समानता की बात हो रही है, तब श्रीमद्भगवद्गीता और अन्य शास्त्रों के विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। यह शोध पत्र महिलाओं की भूमिका का गहराई से अध्ययन करेगा और यह विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार गीता और अन्य शास्त्र नारी सशक्तिकरण के सिद्धांतों को पुष्ट करते हैं। साथ ही यह भी समझने का प्रयास किया जाएगा कि कैसे इन दार्शनिक और धार्मिक सिद्धांतों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की आत्मनिर्भरता और सामाजिक उत्थान के लिए लागू किया जा सकता है।

यह शोध पत्र महिलाओं की भूमिका का गहराई से अध्ययन करेगा और यह विश्लेषण करेगा कि किस प्रकार गीता और अन्य शास्त्र नारी सशक्तिकरण के सिद्धांतों को पुष्ट करते हैं।

वेदों और उपनिषदों में महिलाओं की भूमिका:

वेदों में महिलाओं का योगदान: वेदों में महिलाओं को न केवल सम्मानजनक स्थान प्राप्त था, बल्कि उन्हें शिक्षा, ज्ञान, और आध्यात्मिकता में भी समान अधिकार दिए गए थे। वैदिक काल में महिलाएँ न केवल गृहस्थ

जीवन का संचालन करती थीं, बल्कि समाज सुधार, धर्म, और दर्शन में भी अपनी भूमिका निभाती थीं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में कई ऐसी ऋषिकाओं का उल्लेख मिलता है जिन्होंने वेदों के मंत्रों की रचना की और धर्मशास्त्रों में योगदान दिया।

प्रमुख वैदिक विदुषियाँ

1. **गार्गी वाचक्नवी –** बृहदारण्यक उपनिषद में उनका उल्लेख मिलता है, जहाँ उन्होंने विद्वानों की सभा में महान ऋषि याज्ञवल्क्य से आत्मा और ब्रह्मज्ञान पर गहन शास्त्रार्थ किया। उनकी तर्क शक्ति और ज्ञान के कारण उन्हें तत्कालीन विद्वानों द्वारा ष्ब्रह्म वादिनीष् की उपाधि दी गई थी।

2. **मैत्रेयी –** ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी, जिन्होंने भौतिक संपत्ति के बजाय ब्रह्मज्ञान को सर्वोच्च माना। बृहदारण्यक उपनिषद में उनके संवाद मिलते हैं, जहाँ वे आत्मा और मोक्ष पर गहन प्रश्न करती हैं। उनकी ज्ञान-पिपासा और दार्शनिक दृष्टिकोण ने उन्हें भारतीय दर्शन में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया।

3. लोपामुद्रा द ऋषि अगस्त्य की पत्नी, जिन्होंने ऋग्वेद के कुछ महत्वपूर्ण मंत्रों की रचना की। उनके योगदान से यह स्पष्ट होता है कि वैदिक काल में महिलाएँ न केवल गृहस्थ जीवन तक सीमित थीं, बल्कि धर्म और ज्ञान के क्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभाती थीं।

4. **विश्ववारा –** ऋग्वेद में इनका उल्लेख मिलता है, और उन्होंने कई वैदिक मंत्रों की रचना की। वे वेदों की गहरी ज्ञाता थीं और उनकी रचनाएँ ईश्वर और आत्मा के ज्ञान को विस्तार से समझाने में सहायक हैं।

5. **अपाला –** ऋग्वेद में उनका उल्लेख है, और उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा तथा आरोग्य विज्ञान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उनकी रचनाएँ आयुर्वेद और स्वास्थ्य विज्ञान की नींव रखने में सहायक मानी जाती हैं।

6. **रोमशा, शाश्वती, घोषा और श्रद्धा कामायनी –** ये सभी वैदिक विदुषियाँ थीं, जिन्होंने धर्म, समाज और शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दिया और आध्यात्मिक ज्ञान को आगे बढ़ाया।

उपनिषदों में महिलाओं की भूमिका- उपनिषदों में महिलाओं को आत्मज्ञान प्राप्त करने के लिए पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त थे। वे आत्मा, ब्रह्म, और मोक्ष जैसे विषयों पर गहन चर्चा कर सकती थीं। उपनिषदों की शिक्षाओं में यह स्पष्ट किया गया है कि ज्ञान किसी लिंग विशेष का विषय नहीं है, बल्कि वह सभी के लिए खुला है।

1. **गार्गी वाचक्नवी –**उपनिषदों में गार्गी को एक महान दार्शनिक के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने ब्रह्म, आत्मा, और जगत के संबंध में गहन प्रश्न किए। उनका संवाद याज्ञवल्क्य के साथ हुआ था, जिसमें उन्होंने ब्रह्म को 'अव्यक्त तत्व' के रूप में परिभाषित किया। यह चर्चा भारतीय दर्शन के सबसे महत्वपूर्ण संवादों में से एक मानी जाती है।

2. **मैत्रेयी –** उपनिषदों में मैत्रेयी के संवाद विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया कि 'धन और भौतिक सुख से शाश्वत आनंद प्राप्त नहीं किया जा सकता,' बल्कि केवल ब्रह्मज्ञान से ही वास्तविक मोक्ष संभव है। यह विचार आगे चलकर अद्वैत वेदांत के प्रमुख सिद्धांतों में से एक बना।

श्रीमद्भगवद्गीता में नारी दृष्टिकोण- श्रीमद्भगवद्गीता केवल पुरुषों के लिए नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानवता के लिए एक मार्गदर्शक ग्रंथ है। इसमेंस्त्रियों के आध्यात्मिक उत्थान, कर्म, भक्ति और ज्ञानकी समानता को स्पष्ट रूप से बताया गया है। गीता में श्रीकृष्ण ने स्त्रियों को भी मोक्ष प्राप्ति और आत्मज्ञान के योग्य माना है।

स्त्रियों के आध्यात्मिक अधिकार – श्रीमद्भगवद्गीता में नारी के आध्यात्मिक और सामाजिक अधिकारों की जो व्याख्या की गई है, वह स्पष्ट रूप से यह दर्शाती है कि महिलाओं को पुरुषों के समान आत्मज्ञान, भक्ति और कर्मयोग का अधिकार प्राप्त है। वैदिक काल से ही भारतीय परंपरा में महिलाओं को केवल परिवार और समाज तक सीमित नहीं किया गया, बल्कि उन्हें ज्ञानार्जन, धर्म और नीति में भी समान स्थान दिया गया। श्रीकृष्ण स्वयं गीता में यह स्पष्ट करते हैं कि मोक्ष प्राप्ति के मार्ग में लिंग कोई बाधा नहीं है।

स्त्रियों के मोक्ष प्राप्ति का अधिकारकृगीता के नवम्अध्याय में श्रीकृष्ण अर्जुन को समझाते हैं कि जो भी व्यक्ति उनकी शरण में आता है, चाहे वह किसी भी जाति, लिंग या वर्ग का हो, वह परमगति को प्राप्त कर सकता है-

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्येऽपिस्युः पापयोनयः।
स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेऽपियान्तिपरांगतिम्।। (9.32)

इस श्लोक में श्रीकृष्ण यह स्पष्ट करते हैं कि स्त्रियाँ भी पुरुषों की तरह मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि आध्यात्मिक उन्नति के लिए किसी प्रकार का भेदभाव नहीं है और स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए हैं। यह विचार आधुनिक समय में महिलाओं के आत्मनिर्भर बनने और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

गीता में नारी को केवल मोक्ष प्राप्ति तक सीमित नहीं रखा गया, बल्कि उनके भीतर स्थित दिव्य शक्तियों का भी उल्लेख किया गया है। श्रीकृष्ण कहते हैं-

मृत्युःसर्वहरश्चाहमुद्भवश्चभविष्यताम्।
कीर्तिःश्रीर्वाक्चिनारीणांस्मृतिर्मेधा धृति क्षमा।। (10.34)

इस श्लोक में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं स्वीकार करते हैं कि स्त्रियों में विद्यमान कीर्ति, श्री (लक्ष्मी), वाणी (सरस्वती), स्मृति, मेधा (बुद्धि), धृति (धैर्य) और क्षमा जैसी विशेषताएँ ईश्वरीय गुणों के समान हैं। यह सिद्ध करता है कि स्त्रियाँ केवल करुणा और सहिष्णुता का प्रतीक ही नहीं हैं, बल्कि उनमें तेज, बुद्धि और शक्ति भी समाहित है। यह विचार स्त्री सशक्तिकरण की उस अवधारणा को बल देता है, जो यह मानता है कि महिलाएँ केवल एक सहयोगी शक्ति नहीं, बल्कि स्वतंत्र और निर्णय लेने वाली इकाई हैं।

गीता का कर्मयोग सिद्धांत भी महिलाओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। श्रीकृष्ण कर्म के महत्व को समझाते हुए कहते हैं-

कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेषुकदाचन।
माकर्मफलहेतुर्भूर्मातेसङ्गोऽस्त्वकर्मणि।।(2.47)

इस श्लोक में वे बताते हैं कि मनुष्य को केवल अपने कर्म पर ध्यान देना चाहिए, न कि उसके फल पर। यह शिक्षा न केवल पुरुषों, बल्कि महिलाओं के लिए भी समान रूप से लागू होती है। जब महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रही हैंकृराजनीति, विज्ञान, समाज सेवा, व्यापारकृतब गीता का यह संदेश उन्हें यह प्रेरणा देता है कि वे बिना किसी फल की चिंता किए अपने कर्तव्यों को निभाएँ और आत्मनिर्भर बनें।

भक्ति मार्ग में भी स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हैं। श्रीकृष्ण कहते हैं-

पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति।
तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः।।(9.26)

यह श्लोक यह दर्शाता है कि भगवान किसी भी व्यक्ति की भक्ति को

स्वीकार करते हैं, चाहे वह स्त्री हो या पुरुष। मीराबाई जैसी भक्त कवयित्री इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं, जिन्होंने सामाजिक बंधनों को तोड़ते हुए भक्ति मार्ग को अपनाया और आध्यात्मिक स्वतंत्रता प्राप्त की। गीता यह सिद्ध करती है कि भक्ति, ज्ञान और आत्मानुभूति के मार्ग में कोई भेदभाव नहीं है, और स्त्रियाँ भी पुरुषों के समान रूप से ईश्वर की कृपा प्राप्त कर सकती हैं। इसके अतिरिक्त, गीता यह भी स्पष्ट करती है कि आत्मा का कोई लिंग नहीं होता–

वासांसिजीर्णानि यथा विहाय
नवानिगृह्णातिनरोऽपराणि।
तथा शरीराणिविहायजीर्णा–
न्यन्यानिसंयातिनवानिदेही।।(2.22)

इस श्लोक में श्रीकृष्ण आत्मा को शरीर से अलग बताते हैं और यह समझाते हैं कि जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नए वस्त्र धारण करता है, वैसे ही आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। यह विचार स्त्री–पुरुष समानता की गहरी अवधारणा को प्रस्तुत करता है। यदि आत्मा न तो पुरुष है और न स्त्री, तो आध्यात्मिक और सामाजिक स्तर पर किसी भी प्रकार का भेदभाव उचित नहीं है। यह विचार आधुनिक समाज में लैंगिक समानता के लिए एक सशक्त दर्शन प्रदान करता है।

गीता का यह दार्शनिक दृष्टिकोण आज के युग में महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के लिए एक प्रेरणा स्रोत बन सकता है। यह केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है, जो यह स्पष्ट करता है कि स्त्रियाँ भी आत्मज्ञान, कर्मयोग और भक्ति योग के माध्यम से मोक्ष प्राप्त कर सकती हैं और समाज के उत्थान में समान रूप से योगदान दे सकती हैं। इस प्रकार, गीता का संदेश न केवल प्राचीन भारत की महिलाओं के लिए, बल्कि आधुनिक युग में भी उनके सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।

भारतीय महिला दार्शनिकों का योगदान:

भक्ति आंदोलन और महिला संत:

1. **मीराबाई –** कृष्ण भक्ति की प्रतीक, जिन्होंने समाज के विरोध के बावजूद अपने भक्ति मार्ग को चुना।
2. **अक्का महादेवी –** कर्नाटक की वीरशैव संत, जिन्होंने शिव भक्ति को आत्मसमर्पण का माध्यम बनाया।
3. **संत जनाबाई –** महाराष्ट्र की संत, जिन्होंने जाति और लिंग भेदभाव को तोड़ते हुए भक्ति का प्रचार किया।
4. **अंडाल (गोदा देवी) –** तमिलनाडु की भक्ति संत, जिन्होंने विष्णु भक्ति को अपने जीवन का आधार बनाया।
5. **कर्मवती देवी –** मध्यकालीन संत, जिन्होंने भक्ति आंदोलन में योगदान दिया और स्त्री स्वतंत्रता पर जोर दिया।

आधुनिक भारतीय महिला दार्शनिक:

1. **सावित्रीबाई फुले –** भारत की पहली महिला शिक्षिका, जिन्होंने महिलाओं की शिक्षा के लिए सामाजिक क्रांति की शुरुआत की।
2. **महादेवी वर्मा –** आधुनिक भारतीय साहित्य और नारी वादी विचारधारा की प्रख्यात लेखिका।
3. **सरोजिनी नायडू –** स्वतंत्रता सेनानी और कवयित्री, जिन्हें श्नाइटिंगेल ऑफ इंडियाश कहा जाता है।
4. **मदर टेरेसा –** करुणा और सेवा के प्रतीक, जिन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों की सेवा की।
5. **माता अमृतानंदमयी (अम्मा) –** आध्यात्मिक गुरु, जो प्रेम और सेवा के माध्यम से समाज कल्याण कर रही हैं।
6. **दया बाई –**समाज सेवा और आदिवासी उत्थान में योगदान देने वाली आध्यात्मिक महिला।

आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता– श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित नारी सशक्तिकरण के सिद्धांत केवल प्राचीन काल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय में, जब महिलाएँ शिक्षा, विज्ञान, राजनीति, व्यापार और समाज सेवा के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा रही हैं, तब गीता का संदेश उनके आत्मनिर्भरता और आत्म–साक्षात्कार के मार्ग को और अधिक स्पष्ट करता है।

गीता यह स्पष्ट करती है कि आत्मा का कोई लिंग नहीं होता और आध्यात्मिक उन्नति का अधिकार सभी को समान रूप से प्राप्त है। आज महिलाएँ न केवल अपने पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों को निभा रही हैं, बल्कि नेतृत्वकारी भूमिकाओं में भी सफल हो रही हैं। गीता के कर्मयोग और भक्ति योग के सिद्धांत उन्हें यह प्रेरणा देते हैं कि वे बिना किसी बंधन या सामाजिक बाध्यता के, अपने कर्म और आत्म–विकास पर ध्यान केंद्रित करें।

इतिहास में, भक्ति आंदोलन के दौरान मीराबाई, अक्का महादेवी, और अन्य महिला संतों ने समाज के बंधनों को तोड़कर यह सिद्ध किया कि भक्ति और ज्ञान का मार्ग सभी के लिए खुला है। गीता में वर्णित विचार, कि ष्मुझे जो कोई भी प्रेम पूर्वक भक्ति अर्पित करता है, मैं उसे स्वीकार करता हूँ,ष इस बात की पुष्टि करता है कि आध्यात्मिकता में किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं है।

आज जब महिलाओं को समान अवसरों के लिए संघर्ष करना पड़ता है, तब गीता का कर्मयोग सिद्धांत यह प्रेरणा देता है कि वे अपने अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत रहें, बिना परिणाम की चिंता किए। शिक्षा, तकनीक, सामाजिक कार्यों और व्यवसाय में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी यह प्रमाणित करती है कि वेदों और गीता में जो अधिकार उन्हें दिए गए थे, वे केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी सार्थक हैं।

इस प्रकार, गीता का संदेश केवल आध्यात्मिक जागरूकता तक सीमित नहीं है, बल्कि यह महिलाओं के आत्मनिर्भरता, सशक्तिकरण और उनके समाज में योगदान की आवश्यकता को भी बल देता है। यह न केवल धार्मिक ग्रंथ, बल्कि जीवन दर्शन है, जो नारी उत्थान के लिए एक स्थायी प्रेरणा बना रहेगा।

निष्कर्ष – भारतीय दर्शन में महिलाओं को सदैव उच्च स्थान दिया गया है। वेदों, उपनिषदों और श्रीमद्भगवद्गीता में महिलाओं की भूमिका को समान रूप से स्वीकार किया गया है। भक्ति आंदोलन से लेकर आधुनिक समाज तक, महिलाओं ने शिक्षा, सामाजिक सुधार और आध्यात्मिकता के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान दिया है।

आज के युग में, जब नारी सशक्तिकरण की बात होती है, तो गीता का संदेश हमें यह बताता है कि आत्मा न तो पुरुष होती है, न स्त्री। अत: हर व्यक्ति को ज्ञान और मोक्ष का समान अधिकार प्राप्त है। इस दृष्टिकोण को अपनाकर हम एक अधिक समावेशी और प्रगतिशील समाज की ओर बढ़ सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. रामसुखदासस्वामी (1976) गीता प्रबोधिनी, गीता प्रेस, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश।
2. देसाई, ए. एस. (1987). समाज कार्य शिक्षा का विकास. एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क इन इंडिया, मंत्रालय, समाज कल्याण, भारत सरकार, दिल्ली।
3. ब्रह्मचारी, नवीनकृष्ण 'विद्यालंकार' (1997, 24 फरवरी). श्रीमद्भगवद गीता, श्रीकेशवजी गौड़ीय मठ, मथुरा। प्रथम संस्करण – ॐ विष्णुपादश्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराज जी की आविर्भाव। पृष्ठ 81, 101, 120, 233।
4. शर्मा, डॉ. अर्चना (2016). भारतीय परंपरा में धर्म की अवधारणा एवं मानवतावाद, (प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व) काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश। पृष्ठ 213–217।
5. गोवेन्द्र, गायत्री एवं गोवेन्द्र, अमृत (2017). श्रीमद्भगवद गीता में तनाव प्रबंधन, देव संस्कृति इंटरडिसीप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल, खंड 10।
6. कृष्ण, डॉ. दत्तू मुरली (2019). भगवद गीता और विज्ञान: एक समीक्षा, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हालिया वैज्ञानिक अनुसंधान, खंड 10।
7. बर्मोला, कैलाश चंद्र (2020, अगस्त), भगवद गीता: संघर्ष समाधान की एक तकनीक. एमिटीबिजनेसजर्नल, एमिटीइंस्टीट्यूट ऑफ बिहेवियर एंड एलाइडसाइंसेज, एमिटी यूनिवर्सिटी राजस्थान, जयपुर।
8. सिंह, डॉ. सुषमा (2021). पारंपरिक भारतीय चिकित्सा और बौद्धिक संपदा अधिकाररू एक भारतीय परिप्रेक्ष्य, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ, मैनेजमेंट एंड ह्यूमैनिटी, खंड 4।
9. त्यागी, आयुषी (2022), गीता प्रथम अध्याय पाठ का महत्व और लाभ।
10. भारती, शैलेंद्र (2020). सारेगामा भक्ति।
11. https://www.jagran.com/spiritual/religion-geeta-jayanti-2021-5-shloka-of-geeta-which-give-right-direction-to-life-22290208.html
12. https://youtu.be/ypxjmZ_OFw?si=iZ6Gj_eckhWSQxTJ
13. https://youtu.be/-9oBsKtGd38?si=UzO8tSAvA5GJSGS8
14. https://youtu.be/l2MU7wveU9c?si=ZjVNshSthVhX398D
15. https://youtu.be/s2bbePyJ2_g?si=whjY2h7CCqDGXYaq
16. https://en.m.wikipedia.org/wiki/Bhagavad_Gita
17. https://www.facebook.com/swami.ramdev/videos/881160363675810/?mibextid=rS40aB7S9Ucbxw6v
18. https://dkvaas.org/blogs-1/f/the-importance-of-social-work-in-the-bhagavad-gita

****